‘यथार्थवाद’ विज्ञान की देन है। ‘यथार्थवाद’ का उद्धव 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ। ज्यो-ज्यो सम्प्रति का विकास होता गया, रचनाकारों की ‘यथार्थ’ के प्रति यह स्याभानिक अभिरूचि अल्पक कलात्मक तथा परिष्कृत रूप में सामने आती रही। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में वह स्थिति सामने आई, जब्तक ‘यथार्थ’ के प्रति इस स्याभानिक अभिरूचि तथा निःशा के एक दर्शानिक-वैज्ञानिक आधार प्राप्त निम्न, और एक वाद या आंदोलन के रूप में अपनी स्पष्ट अभिव्यक्ति की।

‘रूस’ में समाजवादी व्यवस्था की स्थापना ने विश्व का ध्यान आकर्षित किया। ‘मायक्सवाद’ एक मात्र बौद्धिक दर्शन न रहकर नवीन समाज व्यवस्था, नवीन शासन पद्धति तथा नवीन संस्कृति का कार्यक्रम बन गया। इस दर्शन के सबसे बड़ी विशेषता उसके रचनात्मक गुण में निहित है। 1936 ई. में ‘प्रगतिशील लेखक संघ’ की बैठक के
फलस्वरूप भारतीय साहित्य में समाजवादी विचारों के प्रचार के लिए संगठन का सहयोग मिल गया। 'प्रेमचंददेल हिंदी उपन्यासों' में माकसंवादी चेतना का विशेष प्रभाव रहा है। भारत में लोकतात्त्विक समाजवाद तथा गणतंत्रता राज्य की स्थापना वर्गविविधता समाज की स्थापना की दिशा में सक्रिय प्रयास है। समाजवादी विचारधारा ने बताया कि देश के अंदर विदेशी शोकन के साथ-साथ पूर्वीमण्डलियों तथा जर्मनीदों का शोकन समाप्त होना चाहिए। अतः मजबूरों तथा किसानों को अपने परिश्रम का पूरा लाभ उठाने के लिए समाजवादी व्यवस्था लानी चाहिए जो वर्ग संघर्ष तथा क्रांति से आ सकती है। भूमि तथा मसौदों का मालिक, व्यक्ति-जमींदार और पूर्वीपति न होकर समाज, विकास तथा मजबूर होगा। ‘समाजवादी वधानवाद’ वर्तमान के विकृत वथार्थ को बदलने का न केवल रास्ता सुझाती है, बल्कि उस परिवर्तन को, उसकी सारी संभावनाओं के साथ मूत्र भी करती है।

गद्द विश्वासों में ‘उपन्यास’ का स्थान सर्वोपरि है। क्लासिक गौरव और जीवन-दर्शन संबंधी उपलब्धियों की दृष्टि से औपन्यासिक संरचना महाकाव्यिक गरिमा के अनुकूल होती है। संबंधतः इसीलिए ‘राल्फ फाक्स’ (Ralph Fox) ने उपन्यासकार को नये समाज का महत्वपूर्ण कहा था। ‘उपन्यास’ को नवयुग का महाकाव्य कहा जाता है। आधुनिक साहित्यिक संरचना में उपन्यास विषय के सबसे अधिक पाठक, अभिनेता और अनुसंधानकारी है। प्रारंभ से ही हिंदी उपन्यासों का जिज्ञासु पाठक होने के नाते गद्द-पद्म की विविध विधाओं में उपन्यास की ओर ही मैंने अपना ध्यान केंद्रित किया। शोध विषय का निर्णय करने से पूर्व मैंने हिंदी के उपन्यास साहित्य पर अब तक हुए शोध-काय्यों का संक्षेप करते हुए एकदम संभावनाओं को खोजा। इसी अध्ययन क्रम में समाजवादी विचारधारा से प्रभावित उपन्यासों ने मुझे सवालक्ष्य प्रभावित किया। उल्लिखित पृष्ठभूमि
के साथ शोध जिज्ञासा लेकर जब मैंने पृथ्वी गुरुवार एवं निर्देशक डा. अमरनाथ से विचार-विमर्श किया, तो हिंदी उपन्यास पर अभावित संपत्त हुए शोध-कार्य के परिप्रेक्ष्य में ‘समाजवादी यथार्थवाद और हिंदी उपन्यास’ किस्मत सब्जा अजुला सिद्ध हुआ। मैंने रूचिकर विषय पाकर पूर्ण मिश्ठा एवं परिश्रम से शोध कार्य प्रारंभ कर दिया।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में ‘समाजवादी यथार्थवाद’ के परिप्रेक्ष्य में ‘यथार्थवाद’ के उदय की पृष्ठभूमि से लेकर उसके कारणों, प्रभावों एवं रूपों का विस्तृत विवेचन है। मैंने समाजवादी यथार्थवाद के स्वरूप का विश्लेषण करते हुए हिंदी उपन्यासों के विशाल बंधार में से समाजवादी यथार्थवादी से प्रभावित पृथ्वी उपन्यासों को चुना, जो पृथ्वी दशक का प्रतिनिधित्व करते हैं। प्रस्तुत शोध-प्रबंध में उपसंहार के अतिरिक्त नौ अध्याय है।

“यथार्थवाद : अवधारणा और विकास” शीर्षक प्रथम अध्याय में यथार्थवाद के सैद्धांतिक स्वरूप का विवेचन किया गया है। यथार्थवाद से संबंधित पारंपरिक और भारतीय आलोचनाओं के मात्रों का विवेचन करते हुए मैंने यथार्थवाद संबंधी तमाम भाषाओं को दूर करने का प्रयास किया है।

‘यथार्थवाद के विविध रूप’ शीर्षक द्वितीय अध्याय में यथार्थवाद के प्रमुख भेदों यथा- ‘आदर्श-मुख्य यथार्थवाद’, ‘अति यथार्थवाद’, ‘आलोचनात्मक यथार्थवाद’, ‘समाजवादी यथार्थवाद’ और ‘जादुई यथार्थवाद’ का विवेचन किया है।

तीसरे अध्याय ‘समाजवादी यथार्थवाद का हिंदी-साहित्य पर प्रभाव’ के अंतर्गत मैंने हिंदी साहित्य खासकर हिंदी उपन्यासों पर समाजवादी यथार्थवाद के प्रभावों को समीक्षा की है।
शोध-प्रबंध के चौथा अध्याय ‘दादा कामरेड’ में ‘समाजवादी यथार्थवाद’ के अंतर्गत ‘यशपाल’ के विचार दर्शन का उल्लेख करते हुए ‘दादा कामरेड’ में चित्रित राजनीतिक मध्यवर्गीय पार्टी के माध्यम से सामाजिक एवं पूर्वी भारतीय शोषण से मुक्त होने के प्रयास को एक्ट किया है, साथ ही उपन्यास में चित्रित वैयक्तिक कुटुंबों को भी उद्धृत करने का प्रयास किया है।

पांचवें अध्याय ‘घरौद’ उपन्यास में ‘समाजवादी यथार्थवाद’ के अंतर्गत महानगरीय समस्याओं, पर्यावरण सम्बन्ध, कॉलेजों की शिक्षा व्यवस्था, सामाजिक मूल्यों का विचार, सामाजिक समानता की नई दिशाएं इत्यादि का अध्ययन किया गया है।

छठे अध्याय ‘बीज’ में ‘समाजवादी यथार्थवाद’ के अंतर्गत दूसरे महायुद्ध, सन् १९६१ की खाति, बंगाल का अकाल, विद्यार्थियों का जुलूस और आंदोलन, स्वाधीनता दिवस इत्यादि के माध्यम से सामाजिक यथार्थवाद के पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया गया है।

शेष श्रीमती के सातवें अध्याय ‘सावधान! नीचे आये हैं’ में बिहार स्थित चंडनपुर क्षेत्र का सामाजिक, जीवन, प्रबंधन एवं सूचनांचक के द्वारा मजदूरों के शोषण तथा ‘आशीष’ एवं ‘उद्योग’ के माध्यम से मजदूरों में क्रांति चेतना के सदृश्यांशों से होने वाले सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन किया गया है।

आठवें अध्याय ‘भीमी-भीमी और बींकियार’ में वनारस और दादी सुन्दरपुर के अभाव एवं रोगजनर दुनिया, उनमें व्याप्त अश्लील, सूचनांचक, जड़ता, धार्मिक संकीर्णता तथा उनकी अपराधी जिज्ञासिका को भी विविध जीवन-संदर्भों में साकार किया गया है। साथ ही शोषण के उस पूर्व तंत्र को भी बारीकी से बेदनाम किया गया है जिसके
एक छोर पर है गिरस्ता और कोठीवाला तो दूसरे छोर पर भ्रष्ट राजनीतिक हवकंडे और सरकार की तथाकथित कल्याणकारी योजनाएं है। बुनकर बिरादरी के आरंभिक शोध में सहायक उसी की अस्वस्थ परंपराओं, सामाजिक कुरूटियों, मजहबी जड़वाद और सांप्रदायिक नजरिये इत्यादि का विश्लेषण है।

नवें अध्याय ‘समाजवादी यथार्थवाद’ से प्रभावित हिंदी साहित्य के कुछ अन्य महत्वपूर्ण उपन्यासों की समीक्षा की गई है। जिसमें ‘भैरव प्रसाद गुर्जर’ कृत ‘मशाल’, ‘गंगा मैया’, ‘नागाजुन’ कृत ‘बलचननमा’ और ‘मार्केडेय’ कृत ‘अमित्वीज’ है।

‘मशाल’ में जहाँ ‘भैरव प्रसाद गुर्जर’ ने श्रीमक्त वर्ग के संघर्ष के चित्रण के द्वारा समाजवादी चेतना को अभिव्यक्ति दी है वहाँ ‘गंगा मैया’ में उत्तर भारत के देहाती जीवन को समाजवादी दृष्टिकोण से चित्रित किया है। जबकि ‘नागाजुन’ कृत ‘बलचननमा’ में एक साधनहीन परिश्रमी एवं इंमानुदर किसान के जीवन की गाथा है। उसके जीवन का क्षेत्र सीमित होते हुए भी, वह भारतीय किसान के जीवन का प्रतीकोष्ठ दर्शाता है। मार्केडेय कृत ‘अमित्वीज’ में वर्ण-व्यवस्था और वर्ग व्यवस्था को मिटाकर सच्चे समाजवाद की स्थापना करने की बात कही गयी है।

इस प्रकार यह शोष-प्रबंध में से परंपरिशिंचित जिज्ञासा की परिणति है। मेरे शोष कार्य की मौलिकता सुवी पाठक एवं बिख्त जन ही करेंगे, किंतु मेरी विनम्र अवधारणा है कि ‘समाजवादी यथार्थवाद’ से प्रभावित हिंदी उपन्यास संबंधी अध्ययन अनुसंधान की दिशा में अपने दंग का पहला प्रयास है।

प्रस्तुत शोष कार्य करते समय मुझे जिन समस्याओं से उलझना पड़ा, उसका उल्लेख करना आप्रवासिक नहीं होगा। सबसे पहली समस्या ‘समाजवादी यथार्थवाद’ से
प्रभावित उपन्यासों के चयन को लेकर थी, जो विषय की दृष्टि से महत्वपूर्ण और प्रसुत रूढ़ कार्य के आधार ग्रंथ बन सके। इसके लिए मुझे मार्क्सवादी चेतना से अनुप्राşıित अधिकांश उपन्यासों को पढ़कर छोड़ना पड़ा, अनेक की समीक्षा और भूमिका पढ़कर उनके कथ्य संदभों को समझ। अंततः शोध-कार्य के निर्देशक महोदय से मार्गदर्शन लेकर पौंच दशक के पौंच औपन्यासिक कृतियों को अथवय के लिए चुना। आतीव उपन्यासों में 'समाजवादी पथार्दवाद' के निरूपण बिंदुओं में निर्देशक महोदय का मार्गदर्शन सहायक बना। इस प्रकार समाजवादी एवं मार्क्सवादी परिप्रेक्ष्यों का सिद्धांत-विश्लेषण करने में विविधकर्षों के साथ-साथ पारंपरिय लेखकों के पुस्तकों से पर्याप्त झोपयता मिली। इस प्रकार प्रसुत रूढ़ कार्य का संपन्न करने में मुझे विभिन्न व्यक्तियों एवं संस्थाओं का अपरिमित सहयोग प्राप्त हुआ उन सभी के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करना में अपना पालन कर्त्य समझता हूं। सर्वसम्मेलन में उन समस्त उपन्यासकारों और ग्रंथकारों के प्रति श्रद्धांजलि हूं जिनकी कृतियों के उपयोग से इस शोध-प्रबंध का कलेवर निर्मित हुआ।

'कलकत्ता विश्वविद्यालय' के मुख्य पुस्तकालय के कर्मचारी गण, 'श्री बड़ा बाजार कुमारसमा पुस्तकालय, कोलकाता', 'सेठ सुरजमल जालान पुस्तकालय, कोलकाता', 'भारतीय भाषा परिषद पुस्तकालय, कोलकाता', 'कशी आम्बी चंद्रकान्ती समा' वाराणसी, के पुस्तकालय, 'कशी हिन्दू विश्वविद्यालय', के मुख्य पुस्तकालय, 'सयाजी शास्त्री गायकवाड़ पुस्तकालय' एवं अन्य पुस्तकालयों के पुस्तकालय वालों के प्रति दुलभ एवं मूर्त्यवान ग्रंथ उपलब्ध कराने के लिए दया से आभार प्रकट करता हूं। शोध प्रबंध के सूची-पुस्तक क्रम के लिए 'मानव प्रकाश' धन्यवाद के पात्र है। मेरे माता-पिता ने शोधकार्य की संपूर्णता के लिए आरंभ से अंत तक जो प्रेरणा, आशीर्वाद एवं सहयोग प्रदान किया, उसके लिए में उनका चिर कृतज्ञ रहूँगा।
मैं ‘डॉ. अमरनाथ शर्मा’ का हदय से आभारी छु, और में उनके प्रति श्रद्धावनत हूं। इसके अतिरिक्त ‘कलकत्ता विश्वविद्यालय’ में हिन्दी विभाग के प्राध्यापकों ‘डॉ. शंभुनाथ’, ‘डॉ. जगदीशर चतुरवेदी’, ‘डॉ. राजश्री शुक्ला’, ‘डॉ. राम अहलाद चौधरी’ एवं ‘प्रेसिडेंसी विश्वविद्यालय’ के हिन्दी विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष ‘डॉ. सुब्रत लाहिडी’ के प्रति श्रद्धावनत हूं, जिन्होंने गोष्टी पत्र परिचर्चा के दौरान बहुमूल्य सुझाव देकर शोध प्रबंध को महत्वपूर्ण बनाया।

अंत में यह शोध प्रबंध में हिन्दी के उन समस्त पाठकों को समर्पित करता हूँ, जो आजीविका के लिए संचर्च्यरत है।

दुर्घट कुमार सिंह